चुङिति कङ् । स्पृक् । स्पृग् । स्पृशो । स्पृशो । स्पृशो । स्पृश्गा । स्पृश्यामि-त्यादि । द्धृक् । द्धृग् । द्धृषो । द्धृषा । द्धृषः । द्धृश्यामित्यादि । षद् । षड् । षड्भिः । षड्भः । षसाम् । षद् ।

सषेस्उस्सनुष्मक्का रङ् फो ज्वाः ॥ १५० ॥

सत्य त्याने जातस्य षस्य इस्उसः सजुषा पङ्गश्च रङ् स्यात् परे परे । न तु चान्तस्य ।

रव्य मनचत्यीको धो धी जुक्हिरो जिले ॥ १५१ ॥ १५१ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ १५८

दोः । दोषो । दोषः । दोषम् । दोषो । पाददत्तेति दोषम् वा । दोषाः । दोषाः । दोषाः । दोषाः । दोषाः । दोष्मं । दोषभ्यामित्यादि ।

स्यादेः सा लापः। विविद्। विविद्। विविद्। विविद्धः। विवि

सुपीः । सुपिता । सुपितः । सुपीर्धाम् । सुपीःषु । वृतं सुतूः । विद्वान् । के विद्वन् । विद्वांसी । विद्वांसः । विद्वांसम् । विद्वांसी । विसान् वः सेम् म्रप्यू उत्त मतुप्याः ॥ १५२॥

वसार वशब्द इम्सिक्ता प्रि उः स्याद मता पा च परे। विड्यः। विड्या। सस्धस्वस्विति दङ्। विद्वद्यामित्यादि। पेचिवान्। पोचिवान्। पोचिवान्। प्रान्वासाः। त्रान्वासाः। त्रान्वासम्। त्रान्वासाः। त्रान्वासम्। त्रान्वासाः। त्रान्वासाः। त्रान्वासम्। त्रान्वासाः। वस्यावे तिहिमित्तस्य नस्य मते।

क्नगमतनाखनवसाम् उङ्लोपो ऽङे ऽच्य ग्रणौ ॥ १५३॥